दलितों के मुक्तिदाता

बाबा साहेब अम्बेडकर

लेखक

श्री सोहनलाल शास्त्री विद्यावाचस्पति बी. ए.

नई दिल्ली-8

प्रकाशक

सिद्धार्थ साहित्य सदन

7/54 साऊथ पटेल नगर, नई दिल्ली-8

आप पढ़िए दूसरों को पढ़ाइए

दलितों के मुक्तिदाता

बाबा साहेब अम्बेडकर

लेखक

श्री सोहनलाल शास्त्री विद्यावाचस्पति बी. ए.

नई दिल्ली-8

प्रकाशक

सिद्धार्थ साहित्य सदन

7/54 साऊथ पटेल नगर, नई दिल्ली-8

प्रस्तुत लघु पुस्तिका का यह संशोधित संस्करण है। पहले इसे अम्बेडकर मिशन सोसाइटी नवां शहर-जालंधर (पंजाब) ने प्रकाशित किया था, किन्तु अब दुबारा इसे कुछ ऐसे सुझावों के साथ प्रकाशित किया जा रहा है जो हमें अपने परम मित्र श्री कृष्ण कुमार बोद्धी द्वारा दिए गये हैं। बोद्धी जी भगवान बुद्ध के सच्चे उपासक और बाबा साहेब के परम श्रद्धालु होने के साथ साथ, लेखन कला के भी पारखी हैं।

यह पुस्तिका गत वर्ष की भान्ति अब भी अम्बेडकर मिशन के प्रचार और प्रसार के लिये बिना मूल्य (फ्री) ही वितरित की जा रही है। हम उस गुप्तदानी का हार्दिक धन्यवाद करते हैं, जिन्होंने पुस्तिका की एक हज़ार प्रतियों के प्रकाशन का सारा खर्च देकर अपने नाम का प्रकाशन करना भी अनुचित समझा है। हम अपने अन्य भाइयों से भी आशा करते हैं कि वह इस पुण्यमय तथा पवित्र कार्य में अपनी शक्ति अनुसार दान देने की उदारता दिखाएंगे, ताकि हम अम्बेडकर मिशन का अधिक से अधिक प्रचार कर सकें जो हमारा परम कर्त्तव्य और पुण्यात्मक काम है।

निवेदक

सोहन लाल शास्त्री

हिन्दू धर्म में शूद्रों-अछूतों का दर्जा

हिन्दू धर्म की रचना चार वर्णों अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र पर आधारित है। चार वर्णों की रचना हिन्दुओं के धर्म विश्वास अनुसार स्वयं परमात्मा ने की है। इसका सबसे प्रथम और मुख्य प्रमाण हिन्दुओं के प्रारम्भिक पवित्र धर्म ग्रन्थ ऋग्वेद में निम्न प्रकार है :

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् बाहू राजन्य कृतः।
उरूतदस्य यद्वैश्यः शूद्रः पद्भ्यामजायत्। (ऋग्वेद)

अर्थात् ब्राह्मण ब्रह्मा के मुख से, क्षत्रिय बाहुओं से, वैश्य जंघा से और शूद्र ब्रह्मा के पैरों से उत्पन्न हुए।

इन चारों वर्णों के चार स्तम्भों पर हिन्दू समाज की इमारत खड़ी है किन्तु ये चार स्तम्भ आपस में एक समान नहीं हैं। सबसे ऊपर ब्राह्मण, उसके नीचे क्षत्रिय, उसके नीचे वैश्य और सबके नीचे शूद्र। अतः इनमें परस्पर बड़े छोटे का अन्तर है। ब्राह्मण चारों वर्णों में शिरोमणि, पूज्य और पुण्ययोनि है और समाज में सब लोगों के लिए आदरणीय हैं। विद्या या वेद आदि ग्रन्थ पढ़ने का केवल इन्हीं ब्राह्मणों का एकमात्र अधिकार है। वह जमीन के देवता ठहराए गए हैं। हिन्दुओं के धर्म ग्रन्थों के आदेश अनुसार ब्राह्मण चाहे कितना भी घोर पाप और अपराध करे तो भी वह मृत्युदण्ड का भागी नहीं है जब कि शूद्र मामूली अपराध करने पर भी मृत्युदण्ड का भागी है (अवन्यो ब्राह्मणः) मनु।

हिन्दू शास्त्रों में स्थान-स्थान पर धर्माज्ञाएं हैं कि ब्राह्मण के छोटे से बच्चे का भी अपमान करना दण्डनीय और निन्दा योग्य है। शास्त्रों के अनुसार ब्राह्मण का दस वर्ष का बच्चा भी शूद्र वर्ण के 80 वर्ष के व्यक्ति से अधिक आदर पाने योग्य है। अगर

गांव में आग लग जाए तो सबसे पहले ब्राह्मण व्यक्ति या परिवार को जलती आग से निकालना धार्मिक कर्तव्य है। ब्राह्मणों की सेवा, पूजा और उन्हें हर प्रकार का सुख प्रदान करने पर ही सुख और स्वर्ग की प्राप्ति होती है। कहां तक वर्णन किया जाए, हिन्दू धर्म ग्रन्थ ब्राह्मणों की प्रशंसा से भरे पड़े हैं।

हिन्दू धर्म में शूद्रों-अछूतों के लिए कोई स्थान नहीं है। हिन्दू धर्म ग्रन्थों के आदेशों के अनुसार इनका एक ही कर्त्तव्य है— वह है अपने से ऊपर वाले तीनों वर्णों की सेवा करना। यह हिन्दू धर्म की धार्मिक फिलासफी के अनुसार अपने पिछले जन्मों के पापों का फल भोगने के लिए भारत में पैदा हुए हैं। इनके लिए हिन्दू धर्म ग्रन्थों में जो आज्ञाएं दी गई हैं, हिन्दू सोसाइटी में शूद्रों-अछूतों का जो दर्जा है उसका अनुमान निम्नलिखित शास्त्रीय फतवों या धर्मादेशों को पढ़ने के पश्चात् लगाना बहुत आसान हो सकता है। वेदों से लेकर ब्राह्मण ग्रन्थों, गृह्यसूत्रों, मनु-स्मृति तथा अन्य स्मृतियों, रामायण, महाभारत, गीता, सत्यार्थ प्रकाश और संस्कृत तथा हिन्दी के सब शास्त्रों में इन्हें जो सामाजिक अधिकार दिए गए हैं उनमें से कुछ का नीचे वर्णन किया जाता है :

1. ईश्वर ने शूद्रों को केवल एक ही आदेश दिया है कि वह ऊपर वाले तीनों वर्णों की सेवा करे। (मनु)
2. शूद्रों को तीनों वर्णों की सेवा के बदले में खाने के लिए जूठन और फटे-पुराने वस्त्र पहनने को दिए जाएं। (मनु)
3. अगर शूद्र किसी प्रकार धनवान हो जाए तो उसके पास धन का संचय नहीं होने देना चाहिए क्योंकि धनवान शूद्र उच्च वर्णों को कष्ट पहुंचाता है। राजा उसका धन छीनकर आधा राजकोश में ले ले और आधा ब्राह्मणों में बांट दे। (मनु)
4. अगर कोई नीच जाति का मनुष्य उच्च जाति वालों का व्यवसाय करके धन उपार्जन करता है तो राजा उसका धन छीन कर उसे गांव से बाहर निकाल दे। (मनु)

5. अगर शूद्र वेद मंत्रों का उच्चारण करे तो उसकी जीभ काट देनी चाहिए। (मनु)
6. अगर कोई शूद्र किसी ब्राह्मण को गाली दे तो उसकी जीभ काट देनी चाहिए। (मनु)
7. अगर कोई शूद्र अभिमानवश ब्राह्मणों को धर्मोपदेश देने की ढिठाई या गुस्ताखी करे तो राजा को चाहिए कि उसके मुँह और कान में खौलता हुआ तेल डलवा दे। (मनु)
8. अगर कोई नीच जाति का मनुष्य उच्च जाति वाले के साथ एक आसन या पलंग पर बैठने का प्रयत्न करे तो राजा उसके नितम्बों (चूतड़ों) को लोहे की गरम सीख से दगवा दे। (मनु)
9. अगर कोई शूद्र जप, तप अथवा हवन करने में तत्पर हो तो वह राजदण्ड का भागी होगा। जैसे शम्बूक शूद्र तप करने पर राम की तलवार का शिकार हुआ। (उत्तर रामचरित)
10. शूद्र जिस शारीरिक अंग से ब्राह्मण को मारे उसका वह अंग ही काट दिया जाए। (मनु)
11. अगर ब्राह्मण किसी मृत शूद्र को देख ले तो वह सूर्य को देखकर ही शुद्ध होगा। (मनु)
12. अगर शूद्र ब्राह्मणी से सम्भोग करे तो राजा उसके लिंग को कटवा दे। शूद्र पिता और ब्राह्मणी माता से उत्पन्न सन्तान चाण्डाल होगी। (मनु)
13. व्यभिचारिणी स्त्री, चोर, चमार, भंगी, धोबी आदि के घर का बना भोजन नहीं खाना चाहिए।
14. जो ब्राह्मण शूद्र को धर्म की बातें बतलाता या सिखलाता है वह शूद्र समेत अन्धकारमय नरक में जा गिरेगा। (पाराशर)
15. ब्राह्मण को जरूरत पड़े तो वह बिना रोक-टोक शूद्र का धन छीन ले क्योंकि शूद्र का अपना धन तो हो नहीं सकता। उसका धन तो केवल सेवा ही है। ब्राह्मण उसका स्वामी

है। अतः वह सब धन वास्तव में ब्राह्मण का ही धन है।

16. सुनियार का अन्न खाने से आयु नष्ट होती है और चमार का अन्न खाने से यश नष्ट होता है। (मनु)
17. जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र की कन्या से विवाह करता है वह अपनी सन्तान सहित शूद्रत्व को प्राप्त हो जाता है। (अत्रि)
18. ब्राह्मण की विवाहिता शूद्र पत्नी के हाथ का बनाया खाना देवता और पितर स्वीकार नहीं करते और जो ब्राह्मण शूद्राणी का पति होता है वह स्वर्ग में नहीं जा सकता। (पाराशर)
19. जो जन्ममात्र से ब्राह्मण है वह राजा के लिए अथवा राजा की ओर से धर्मोपदेशक बन सकता है किन्तु शूद्र चाहे कितना भी विद्वान हो, वह तीन काल में भी धर्मोपदेशक नहीं हो सकता। (मनु, अत्रि)
20. जिस राजा के राज में कोई शूद्र न्यायाधीश होता है उस राष्ट्र का देखते-देखते ही पतन हो जाता है। (मनु)
21. शूद्र का अन्न खाना, शूद्र के साथ सम्पर्क (मेल जोल) रखना और शूद्र से ज्ञान प्राप्त करना तेजयुक्त ब्राह्मण को भी पतित कर देता है। (मनु)
22. ब्राह्मण का अन्न अमृत के समान है किन्तु शूद्र का अन्न रुधिर तुल्य है। (अत्रि)
23. ब्राह्मण से 2%, क्षत्रिय से 3%, वैश्य से 4% और शूद्र से 5% मासिक व्याज लेना चाहिए। (मनु)
24. ब्राह्मण के नाम के अन्त में शर्मा, क्षत्रिय के नाम के अन्त में वर्मा, वैश्य के नाम के आगे गुप्त, और शूद्र के नाम के अन्त में दास शब्द लगाने चाहिए। (मनु)
25. यदि शूद्र किसी ऊंची जाति का अपमान करे तो उसकी जीभ में लोहे की कील गर्म करके गाड़ देनी चाहिए। (मनु)
26. जिस राजा के कर्त्तव्य (धर्म) का विचार शूद्र करता है

उस राजा का राज तत्काल नष्ट हो जाता है। (मनु)

27. अगर ब्राह्मण शूद्र का अन्न खाकर मरेगा तो वह शूद्र के घर ही जन्म लेगा। (मनु)
28. चमार, भंगी, चण्डाल आदि जातियां गांव-नगर से बाहर ही बसें और सम्पत्तिविहीन रहें। इनका धन—कुत्ते और गधे हों, यह मृतकों के वस्त्र पहनें, मिट्टी के बरतनों में भोजन करें। लोहे के भूषण पहनें, धर्मात्मा लोग इनके साथ व्यवहार न करें। इन लोगों का विवाह आपस में हों और यह आपस में ही लेन-देन करें तथा यह लोग अपने साथ कोई ऐसा निशान लगाएं जिससे फौरन पहचाना जा सके कि यह नीच जाति के लोग हैं। (मनु)
29. चमार, धोबी आदि को छू लेने पर ब्राह्मण को आचमन करना चाहिए और घी खाकर शुद्ध होना चाहिए। (अत्रि)
30. शूद्र का अन्न खाते हुए जो ब्राह्मण सन्तान उत्पन्न करता है उसकी सन्तान भी शूद्र उत्पन्न होती है क्योंकि वीर्य की उत्पत्ति तो अन्न से ही होती है। (मनु)
31. चमार, भाट, भील, धोबी, नट और भंगी इनके साथ बातचीत करने के पश्चात् स्नान करना चाहिए, तब शुद्धि होगी। (मनु)
32. उत्तर रामचरित में वर्णित है कि श्री रामचन्द्र ने चातुर्वर्ण्य व्यवस्था को बनाए रखने के लिए ही महात्मा शम्बूक (शूद्र) को तपस्या करने के अपराध के लिए ही कत्ल कर दिया था क्योंकि तपस्या का अधिकारी तो केवल सवर्ण हिन्दू ही हो सकता है। शूद्र का धर्म तो केवल ऊपर वाले वर्णों की सेवा करना मात्र है। यह है मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामचन्द्र की धर्म मर्यादा का पालन।
33. भगवत् गीता में श्री कृष्ण ने स्वयं ईश्वर होने का दावा किया है और कहा है कि मैं (परमात्मा) ने स्वयं चारों वर्णों को बनाया है। स्त्री और शूद्र को पापयोनि अर्थात्

पिछले जन्मों के पापों का फल भोगने के लिए बनाया है।

34. सारे संसार को ब्रह्मस्वरूप मानने वाला वेदान्त फिलौस्फी का अद्वितीय प्रचारक शंकराचार्य जो अपने आप को जगद्गुरु भी कहता था, वह भी शूद्र को वेद सुनने पर उसके कानों में पिघला सीसा भरवाने का उपदेश देता है। उसके मत में शूद्र श्मशान (मुरदा घाट) की भाँति है। अतः जैसे श्मशान में वेद पढ़ना-सुनना वर्जित है; इसी प्रकार शूद्र के पास भी वेद नहीं पढ़ना चाहिए। क्या इसे ढोंगी वेदांती ना कहा जाए जो कहता है कि सारा जगत ही परमात्मा का स्वरूप है किन्तु शूद्र को निन्दित मानकर सवर्ण हिन्दुओं से नीच और पृथक् मानता है। उसकी कथनी और करनी में कितना अन्तर है, अतः हम उसे जगद्गुरु कैसे कह सकते है? जगत्गुरु क्या, इसे भारत गुरु भी नहीं माना जा सकता।

35. गोस्वामी तुलसी दास ने जनता की भाषा में रामचरित मानस लिखकर प्रत्येक सवर्ण हिन्दू के मस्तिष्क में यह उपदेश भर दिया कि—

पूजिए विप्र ज्ञान गुनहीना।
पूजिए न शूद्र ज्ञान प्रवीना॥
ढोल गँवार शूद्र पशु नारी।
यह सब ताड़न के अधिकारी॥

ब्राह्मण चाहे महामूर्ख ही क्यों न हो उसकी पूजा करनी चाहिए। किन्तु शूद्र चाहे ज्ञान में कितना भी महान विद्वान हो तो भी उसकी सेवा पूजा नहीं करनी चाहिए।

(राम चरित मानस)

36. हिन्दुओं में एक ऐसा सम्प्रदाय पैदा हुआ जिसे आर्यसमाज कहा जाता है। वह अपने आप को बड़े सुधारवादी होने का ढोल पीटते हैं। उनका यह प्रचार है कि वह जन्म की जातिपांति को नहीं मानते और हिन्दूमात्र से समान

सामाजिक व्यवहार करते हैं।

आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती हैं और उनकी प्रसिद्ध पुस्तक जो आर्यसमाजियों के लिए मार्गद्रष्टा पुस्तक है उसका नाम है सत्यार्थप्रकाश। स्वामी दयानन्द जी ने अछूतों और शूद्रों के लिए उस पुस्तक में लिखा है कि :

चण्डाल, भंगी और चमार आदि नीच जातियों के हाथ का बनाया भोजन नहीं खाना चाहिए। ब्राह्मण आदि ऊंची जातियों के हाथ का बनाया भोजन ही खाना चाहिए क्योंकि पौष्टिक और उत्तम वस्तुओं के खाने पीने से जैसा ब्राह्मण और ब्राह्मणी के शरीर में दुर्गन्ध आदि दोषों से रहित रज-वीर्य उत्पन्न होता है वैसा चण्डाल-चण्डालिनी के शरीर में नहीं होता। चण्डाल का शरीर दुर्गन्ध पदार्थों से भरपूर होता है किन्तु ब्राह्मण आदि जातियों का ऐसा नहीं होता।

इसी प्रकार स्वामी दयानन्द ने जातिभेद तोड़ने को भी सुधार की बजाए बिगाड़ माना है। स्वामी दयानन्द चारों वर्णों को कायम रखना हिन्दू समाज की उन्नति के लिए अनिवार्य समझते हैं। उनके विचारों में जो व्यक्ति वर्ण व्यवस्था को नहीं मानता वह आर्य (हिन्दू) नहीं कहला सकता। स्वामी जी की मान्यता है कि चातुर्वर्ण व्यवस्था वेदों में प्रतिपादित है और उनके सिद्धान्तानुसार जैसे कोई मुसलमान कुरान के न मानने पर मुसलमान नहीं कहला सकता एवं बाइबल के न मानने पर ईसाई नहीं माना जा सकता; इसी प्रकार जो व्यक्ति वेदों में प्रतिपादित चारों वर्णों को नहीं मानता वह हिन्दू (आर्य) नहीं कहला सकता।

इसी प्रकार हिन्दू जाति के समाज सुधारक महात्मा गांधी के मत अनुसार जो चारों वर्णों में विश्वास नहीं रखता और उन वर्णों में विहित आदेशों को नहीं मानता वह हिन्दू नहीं है।

स्वामी दयानन्द जी के मत में समाज में चार वर्ण अनिवार्य हैं। कहने को तो वर्ण व्यवस्था जन्म से न मानकर वह गुण, कर्म,

स्वभाव से मानते हैं लेकिन चलती जन्म से ही है, क्योंकि गुण, कर्म, स्वभाव नापने की अभी तक कोई मशीन नहीं बन पाई है। इसलिये सनातनी हिन्दू और आर्यसमाजी जात-पांत मानने में दोनों एक समान ही हैं। अगर एक भूतनाथ है तो दूसरा प्रेतनाथ।

ऊपर लिखी धार्मिक आज्ञाओं को हिन्दू राजों-महाराजाओं ने सरकारी तौर पर कानूनी दर्जा देकर इन पर पूरा आचरण किया, कराया और सवर्ण हिन्दूओं ने इन आज्ञाओं, आदेशों और उपदेशों को अपना धार्मिक कर्त्तव्य समझ कर पालन किया। इसी का परिणाम है कि ब्राह्मणों को सारे समाज में उच्च स्थान प्राप्त है और शूद्रों को सबसे निचला दर्जा मिला है। इन दो वर्णों का भेद पारस्परिक भेद या अन्तर तो आकाश-पाताल का अन्तर है जिसे प्रत्येक व्यक्ति सामान्य तौर पर प्रतिदिन के व्यवहार में देख सकता है।

डा० अम्बेडकर के जन्म से पहले अछूतों की हालत

परम पूज्य बाबा साहेब डा० अम्बेडकर के जन्म से पहले अछूतों की हालत पशुओं से भी बुरी थी। उन्हें समाज में कोई भी अधिकार प्राप्त नहीं था। वे हर सामाजिक अधिकार से वंचित थे। उन्हें गन्दे पेशे करने सौंपे गए थे। वह भयानक रूप से गाँव-नगरों से बाहर गली-सड़ी झौंपड़ियों में रहते, जूठन खाते, फटे-पुराने चीथड़े पहनते थे। उन्हें किसी भी व्यापार या सरकारी नौकरी में स्थान नहीं मिलता था। इसलिए वह गरीबी का शिकार थे। उन्हें राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक अधिकारों से वंचित रहने पर मजबूर कर दिया गया था। हिन्दू लोग समझते

थे कि अछूतों पर अत्याचार करना धर्म और पुण्य का काम है क्योंकि हिन्दुओं के धर्मशास्त्रों में इस प्रकार के ही अत्याचार करने के लिए उन्हें पापयोनि कहा गया है। अछूत लोग भी इन अत्याचारों को अपने पिछले जन्म के पापों का बुरा फल समझ कर उनके विरुद्ध किसी प्रकार की आवाज नहीं उठाते थे। इतना होने पर भी अछूत हिन्दुओं में ही गिने जाते थे मगर वह किसी हिन्दू मन्दिर में दाखिल नहीं हो सकते थे। यहाँ तक कि वे हिन्दू महल्लों में भी नहीं रह सकते थे। हिन्दुओं के कूओं और घाटों से पानी नहीं भर सकते थे। किसी हिन्दू को छू तक नहीं सकते थे। सोने-चांदी के जेवर और सुथरा कपड़ा नहीं पहन सकते थे। उच्च जीवन की अभिलाषा नहीं कर सकते थे। ऐसी बन्दिशें और प्रतिबन्ध हिन्दू समाज की तरफ से अछूतों पर धर्म के नाम पर लागू थे। अछूत अपना जीवन अधीनता, दीनभाव और बेइज्जती से गुजार रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि वह गुलाम ही पैदा हुये हैं और गुलाम ही मरेंगे। सच कहा जाए तो भारत भूमि अछूतों के लिए नरक के समान थी। इसी दुर्दशा को देखकर प्रसिद्ध मुस्लिम कवि सर० इकबाल ने अपनी एक कविता में बर-बस कहा :

'आह ! शूद्र के लिए हिन्दोस्तान ग़मख़ाना है।'

धर्म के नाम पर उनका जगह-जगह अपमान होता था। शिक्षा-प्राप्ति के लिये पाठशालाओं के द्वार अछूतों के लिये बन्द थे क्योंकि हिन्दू शास्त्रों में लिखा था कि अछूत और स्त्री को विद्या का अधिकार प्राप्त नहीं। इन करोड़ों अछूतों के दिल और दिमाग पर जहालत के ताले लगाये गये थे। वे पुरुषार्थ की बजाय भाग्य पर भरोसा रखते थे। अछूत सदियों से ऐसी दीनता भरी हालत को प्रभु की माया और कर्म की गति समझ कर सहन करते आ रहे थे। अछूत जातियाँ भारत भर में फैली हुई हैं और उन पर भिन्न-भिन्न प्रान्तों में भिन्न-भिन्न प्रकार की पाबन्दियाँ लगाई गई थीं। राजस्थान और उत्तरप्रदेश में हिन्दू दुकानदार अछूत को सौदा

बेचने के बाद उससे पैसे अपने हाथ में नहीं लेता था बल्कि लकड़ी के एक बड़े चमचे में पैसा डालने के लिये कहा जाता था। हर हिन्दू की दुकान पर पानी से भरा एक बर्तन पड़ा रहता था। अछूत अपने पैसे को धोकर उस में डाल देते और दुकानदार चिमटे से पकड़ कर उसे ले लेते थे। उसी प्रकार बेची हुई वस्तु देने में भी विशेष ध्यान रखा जाता था। हिन्दू दुकानदार बेची चीज को ऊंचाई से फेंकते थे। पानी पीने के लिये छबीलों पर उनके लिए लोहे और बाँस की नलकियाँ लगी रहती थीं। जब इन्हें प्यास लगती थी तो वह बाँस की नलकी से अपना मुँह लगा लेते और पानी पिलाने वाला हिन्दू ऊपर से पानी फैंकता था। भारत के दक्षिणी प्रांतों में हिन्दू धर्म का पालन उत्तरीय प्रांतों से अधिक किया जाता था। इसी लिये दक्षिण के प्रांतों में अछूतों को दूर रखने के लिये फासला नियत था। क्योंकि अछूत की छायामात्र से ही हिन्दू का शरीर और उसके खाने-पीने की चीजें अपवित्र (भ्रष्ट) हो जाती थीं। मद्रास प्रांत में अछूतों को अदालत में बयान देने के लिये भी ब्राह्मण जज से बहुत दूर रहना पड़ता था। मालाबार प्रदेश में बड़े मन्दिरों में जाने वाली सड़कों पर अछूतों को चलने का अधिकार नहीं था। महाराष्ट्र के पेशवों के शासन काल में महाराष्ट्र में यदि कोई सवर्ण हिन्दू सड़क पर चल रहा हो तो अछूत को वहाँ चलने की आज्ञा नहीं होती थी। अछूत को अपनी बाजू या गले में निशानी के तौर पर एक काला डोरा बाँधना पड़ता था ताकि सवर्ण हिन्दू उसे भूल से छू न लें। अछूतों के लिये राज-आज्ञा थी कि वो कमर में झाड़ू बाँधकर चलें ताकि चलने से उनके पैरों के निशान जो जमीन पर पड़ते हैं, वह झाड़ू से मिट जायें ताकि कोई भी सवर्ण हिन्दू अछूत के पैरों के निशान पर अपने पैर रखने से अपवित्र न हो जाये। सड़क पर चलते समय अछूतों को अपने गले के साथ मिट्टी की हाँडी बाँधने का हुक्म था ताकि वे सड़क पर थूकने की बजाय हाँडी में थूकें। उत्तर प्रदेश और राजस्थान में भंगी सिर पर मुर्गे का पंख लगा

कर चलते थे या झाड़ू बगल में दबा कर 'हू बचो हू बचो' की ऊँची ध्वनि करते जाते थे ताकि कोई उन्हें छू न जाये। चमारों को बाजू पर काला धागा बाँधना पड़ता था। अछूतों द्वारा बर्तन छू जाने पर उसे माँजना ही काफी नहीं समझा जाता था बल्कि आग में डाल कर शुद्ध किया जाता था। अछूतों के लिये शादी-ब्याह में ढोल बजाने पर हिन्दू आबादी में से बाजा बजाते हुये निकलने की सख्त पाबन्दी थी। अगर कोई ऐसी गुस्ताखी कर बैठे तो सवर्ण हिन्दुओं द्वारा मार-पीट की जाती थी। शादी में पालकी ले जाने की बन्दिश थी, इसलिये अछूत दूल्हा-दुलहिन को पैदल चलना पड़ता था। गढवाल और कुमांयु में अछूत दूल्हे को घोड़े पर सवारी करने की बिलकुल इजाजत नहीं थी। राजपूत और ब्राह्मण की मौजूदगी में अगर कोई महार, चमार, भंगी चारपाई से न उठे तो उसको बड़ी जात के हिन्दुओं का अत्यन्त अपमान समझा जाता था और अछूतों को इस ढिठाई पर कठोर दण्ड दिया। जाता था! अछूतपन के कारण उनके रोटी कमाने के साधन अति सीमित हो गये थे। इसलिये अछूत लोग गरीबी का बहुत बुरी तरह से शिकार बने चले आ रहे थे। गरीबी और अनपढ़ता के कारण उनका जीवन स्तर बहुत ही नीचे चला गया था जिसके परिणामस्वरूप उनमें दीनता और हीनता की भावना पैदा हुई और पतन की अवस्था चरम सीमा तक पहुँच गई। हिन्दू धर्म के अनुसार अछूतों को शूद्रों से भी नीचा माना जाता है। जब शूद्र को ही मनुष्य मानने में हिन्दू धर्म ग्रन्थों में हिचकचाहट प्रकट की है तो ऐसी हालत में अछूतों को मनुष्य ही न माना गया हो तो इसमें आश्चर्य की बात ही क्या है!

डा० अम्बेडकर का अछूतों की आज़ादी के लिए संघर्ष

परम पूजनीय बाबा साहेब डा० भीम राव अम्बेडकर जी M.A Ph.D. DSc. L.L.D.D.Litt. BAR AT LAW कानून मन्त्री तथा भारतीय संविधान के निर्माता का जन्म 14 अप्रैल 1891 ई0 को महू छावनी मध्य प्रान्त में एक अछूत परिवार में हुआ। आप बचपन से ही आत्म सन्मानी, अटल निश्चयी, आत्म-विश्वासी, बहादुर, महापुरुष थे। अन्य अछूतों की तरह उन्हें भी अछूत होने के कारण बचपन से ही कदम-कदम पर हिन्दू समाज के दुर्व्यवहार से अपमानित होना पड़ा। अछूतपन से होने वाले प्रत्येक अपमान तथा अत्याचार से बाबा साहेब के आत्म-सम्मान को बड़ी चोट लगती थी और उनका मन बड़ा दुखी हो उठता था। परन्तु साथ ही प्रत्येक घटना उनको आगे बढ़ने की प्रेरणा देती रही। हिन्दू समाज के इस अपमान तथा दुर्व्यवहार से उन्होंने अपने जीवन का एकमात्र उद्देश्य निश्चित किया और वह उद्देश्य था हिन्दू समाज के अन्याय तथा अत्याचार से अछूतों को मुक्ति दिलाना। बाबा साहेब ने यह प्रतिज्ञा की थी कि यदि मैं अछूतों का उद्धार न कर सका, सदियों के बुरे संस्कार के फल-स्वरूप अछूतों को अपने को नीच समझने की भावना को नष्ट करके उनको मानवता का पाठ न सिखा सका और छूत-छात खत्म करके हिन्दू समाज के अन्याय तथा अत्याचार से अछूत समाज को बचा न सका तो मैं अपना जीवन गोली मार कर खत्म कर लूंगा। और इस प्रकार जीवन का लक्ष्य निश्चित करके बाबा साहेब अपने लक्ष्य मार्ग पर चलने का कार्य करने लगे।

बाबा साहेब अम्बेडकर जो से पहिले भी अछूतों में अनेक समाजसुधारक साधु, सन्त, महात्मा पैदा हुये और उन्होंने अपनी

बुद्धि और शक्ति के अनुसार कुछ न कुछ काम किया जरूर लेकिन अछूतों की असली बीमारी का वह सही निदान नहीं कर सके बल्कि कहना चाहिए कि वह छूआ-छूत के बाहरी लक्षणों को देख कर गलत इलाज करते रहे। कोई भी वैद्य चाहे वह धन्वन्तरि भी क्यों न हो जब तक रोग के मूल कारण को नहीं जान सकता वह बीमारी का इलाज करने में असमर्थ रहेगा। मानना पड़ेगा कि ऐसे साधु, सन्त, महात्मा और गुरुओं ने बीमारी की जड़ को पकड़ने का या तो प्रयत्न ही नहीं किया अथवा उन में इस भयानक रोग के कीटाणुओं की जानकारी के लिए जिस बुद्धिमत्ता, योग्यता और क्षमता की आवश्यकता जरूरी है, वह थी ही नहीं।

बाबा साहेब ही अछूत इतिहास में ऐमे पहले महापुरुष हैं जिन्होंने अछूतों की बीमारी का मूल कारण खोजा और हिन्दू धर्म के मूलभूत धर्मग्रन्थों को बड़े ध्यानपूर्वक पढ़ा और मनन किया। आखिर में वह इस परिणाम पर पहुंचे कि अछूतों की गरीबी, जहालत, अनपढ़ता, अपमान और जो अन्य अत्याचार, अन्याय इन पर शताब्दियों से होते चले आ रहे हैं उनका असली और मूल कारण तो हिन्दू धर्म ग्रन्थ ही हैं। बाबा साहेब ने इस बीमारी की जो करोड़ों मानवों को आज भी अस्पृश्य बनाये हुये हैं, इसके विषैले किटाणु हिन्दू धर्म में पवित्र समझे जाने वाले ग्रन्थों और ऐसे ग्रन्थों पर आचरण करने वाले सवर्ण हिन्दुओं के दिल व दिमाग में मौजूद पाये। ऐसी खोज और छानबीन करने के बाद यह अनुभव किया कि अछूत जब तक हिन्दू धर्म और उसके धर्म ग्रन्थों को मानते रहेंगे उनकी हालत कभी भी नहीं सुधर सकेगी और वह सदा के लिए अछूत ही बने रहेंगे। हिन्दू समाज में जब तक चारों वर्ण मौजूद हैं और जब तक इन चारों वर्णों का कायम रखने वाले धर्म ग्रन्थ मौजूद हैं तब तक अछूतों का कभी उद्धार नहीं हो सकता। हिन्दू धर्म की बुनियाद में ही अछूतों के लिये नफरत, घृणा और सामाजिक असमानता

का व्यवहार करना ही बताया गया है। बाबा साहेब ने इन अछूतों को इस बीमारी से छुटकारा दिलाने के लिये आजीवन संघर्ष किया। गोलमेज़ कान्फरैन्स लण्डन में अछूतों का मुकदमा पेश करके इस बेखौफ, विद्वान, महापुरुष ने बड़ी योग्यता के साथ मुकदमा लड़ा जिसे इतिहास कभी भुला नहीं सकता। सदियों से छल और कपट से छीने गये अछूतों के अधिकारों को गोलमेज कान्फरैन्स लण्डन में हिन्दुओं के सबसे बड़े राजनीतिक नेता माने जाने वाले महात्मा गांधी से टक्कर ले कर अछूतों के लिये राजनीतिक अधिकार प्राप्त किए। आज भारत भर में प्रान्तों की असेम्बिलयों और भारत की पार्लियामेन्ट में प्रतिनिधित्व का अनुपात, सरकारी नौकरियां और शिक्षा सम्बन्धी सहूलियतें दिलवाना, यह सब बाबा साहेब डा० अम्बेडकर के संघर्ष का ही परिणाम है। आज कई कृतघ्न, स्वार्थी, अछूत कौंसिलों के मैम्बर व मन्त्री इस शेर-बब्बर के मारे हुये शिकार को कायर और भूखे गीदड़ों की तरह खाये जा रहे हैं और कह रहे हैं कि हमें यह अधिकार महात्मा गांधी और कांग्रेस की बदौलत ही मिले हैं। डाक्टर अम्बेडकर ने अछूतों को समता और न्याय प्राप्त करने के लिये अनेक बार सत्याग्रह किये। भारत भर में उनके हर प्रकार की अधिकार प्राप्ति के लिये जोरदार आवाज उठाई और महाभारत के भीष्म की तरह इस भीम ने प्रतिज्ञा की कि मैं अछूतों पर ढाए जा रहे अमानवीय अत्याचारों को समाप्त करने के लिए आजीवन संघर्ष जारी रखूंगा। बाबा सहेब के इस त्याग, तपस्या, शूरवीरता, निर्भयता को देखते हुये कहना पड़ता है कि बाबा साहेब से बड़ा महापुरुष अछूतों में न पहले हुआ और न आगे होगा। (न भूतो न भविष्यति)

जनता में अति गरीब, अति साधनहीन, अति निरादरयुक्त अछूत जनता की इतने बड़े देश में साधनों का अभाव होते हुये इतने कमजोर और अनपढ़ तथा मुरदा दिलों में एकता की भावना के साथ-साथ धार्मिक विद्रोह और उन्नति की भावना पैदा कर देना

बाबा साहेब अम्बेडकर का महान चमत्कार था। बाबा साहेब के संघर्ष से पहले अछूतों को मानव अधिकार प्राप्त न थे। बाबा साहब ने अपनी दूरदर्शिता, विद्वता और संघर्ष से मानव अधिकार अछूतों को दिलवाये। सरकारी नौकरियों के सब दरवाजे अछूतों के लिये बन्द थे। आज हरेक महकमे के सरकारी दफ्तरों में अछूत नौजवान अच्छी नौकरियों पर विद्यमान हैं। आज काफी संख्या में मैजिस्ट्रेट, सब जज, तहसीलदार, प्रिंसीपल, प्रोफैसर, वकील इन्जीनियर, डाक्टर, डिप्टीकमिश्नर मैजर, लैफटीनैन्ट, सुपरिंटेंडैन्ट, पटवारी, सिपाही, थानेदार इन्सपैक्टर जो अछूत जातियों में से दिखाई पड़ते हैं, यदि वह शिक्षित न होते तो आज वह भी अपने बाप दादा की भान्ति सड़कों की सफाई करते, सिरों पर पखाना उठाते अथवा मरे जानवरों के चमड़े उधेड़ते या घास-फूस खोदते दिखाई देते। गुरु गोबिन्दसिंह जी ने कहा था कि चिड़ियों से मैं बाज मरवाऊं तब मैं गोबिन्द नाम धराऊं अर्थात् मैं दुर्बल हिन्दुओं को बलवान शासकों कामुका बला करने के लिए तैयार करूंगा। इसी प्रकार बाबा साहेब ने अर्धमृत, सदियों से दबे-कुचले, बे-सहारा, गरीब अछतों को नया जीवन देकर उनमें आत्म सम्मान की भावना पैदा करके अत्याचारियों से लोहा लेने के लिए तैयार किया। उनका नारा था :

'शिक्षित बनो, संगठित हो जाओ और संघर्ष करो।'

ईसामसीह ने मुरदों और कोढ़ियों पर हाथ फेर कर उनको जीवित कर दिया। पता नहीं बाइबल के इस कथन में कितनी सच्चाई है। किन्तु हम अपनी आंखों से देखते हैं कि सवर्ण हिन्दूओं द्वारा मृत बनाये गये और अपमान के कोढ़ से दूषित किए गये अछूतों को बाबा साहेब अम्बेडकर ने नया जीवन देकर इन्हें जीवित कर दिया है। हम दावा से कह सकते हैं, कि बाबा साहब अम्बेडकर जैसा अछूतों, दलितों और हज़ारों बरसों से गुलामी के जेलखाने में पड़े सड़ रहे लोगों का मसीहा आज तक संसार ने कभी पैदा नहीं किया।

गुलामों ! विद्रोह कर दो

बाबा साहेब डा० अम्बेडकर इस सच्चाई को बहुत अच्छी प्रकार जानते थे कि अछूतों में आत्म सन्मान की भावना पैदा किए वगैर अछूतों का कल्याण नहीं हो सकता। इसलिए वह अपने भाषणों में अछूतों को बगावत करने के लिए और अपने पाँव पर खड़े होने का उपदेश देते थे। अपना उद्धार स्वयं आप करो यह उनके आदेश, उपदेश और संदेश का मूल मन्त्र होता था। उनके भाषणों को सुनने और उनके दर्शनों के लिये इकट्ठे होने वाले अछूतों को उनकी गरीबी के कारण मैले-कुचैले, फटे-पुराने कपड़ों और उदास, मुरझाये हुये चेहरों को देखकर बाबा साहेब का हृदय दुखी हो उठता था और ऐसी अवस्था में वह उन अभागे अछूतों को जागृत और सचेत करने के उद्देश्य से बुरी तरह फटकारते और कहते—"अरे तुम्हारी यह दुर्दशा, तुम्हारे करुणाजनक चेहरे और दीनता तथा हीनता देखकर मेरा कलेजा फटा जा रहा है ! तुम अपने इस दीन-हीन जीवन से संसार की दरिद्रता को क्यों बढ़ाते हो ? ऐसी अवस्था में तुम मां के पेट में ही क्यों नहीं मर गए ? अब भी तुम मर जाओ तो संसार पर तुम्हारा उपकार ही होगा। इस बेइज्जती की जिंदगी से मरना कहीं अच्छा है।"

तुम अगर जीना चाहते हो तो इज्जत के साथ जीओ, जिंदादिल बहादुर बन कर जीओ। तुम्हारे पास भी औरों की तरह हाथ पांव हैं। तुम्हारे शरीर में भी दूसरे लोगों की तरह खून बह रहा है। तुम्हारी खोपड़ी में भी भेजा है। उठो, जालिम का मुकाबला करो, क्योंकि अत्याचार करने वाले से अत्याचार सहने वाला अधिक दोषी है। जैसा खाना, कपड़ा और मकान इस देश के दूसरे लोगों को हासिल है वैसा खाना, कपड़ा और मकान तुम्हें भी प्राप्त होना चाहिए ! तुम भी भारत माता की सन्तान

हो इसलिए जो सुख और सहूलियतें दूसरे लोगों को प्राप्त हैं उन्हें प्राप्त करना, तुम्हारा भी जन्मसिद्ध अधिकार है। तुम्हारी हालत गुलामों से भी बुरी है।

गुलामों के मालिक उन्हें छूते थे। उनके हाथ का बना खाना खाते थे। यहां तक ही नहीं भारत के तुर्क शासक सबके सब गुलाम वंश में से थे किन्तु उनके सिर पर राजमुकट रखने वाले अफगान और पठान बादशाह थे। दूसरी तरफ तुम हिन्दुस्तानी गुलामों को छूना भी पाप समझा जाता है। सवर्ण हिन्दू अपने खाने-पीने पर तुम्हारा साया पड़ना भी सहन नहीं कर सकते। तुम्हारे पास कोई व्यापार नहीं, कोई नौकरी नहीं, जमीन नहीं, धन नहीं और तुम्हारे हाथ में शत्रु का मुकाबला करने के लिये कोई हथियार भी नहीं है।

मेरे विचार में तुम्हारे पास मनोबल का अत्यंत अभाव है। हिन्दुओं के प्रतिदिन के बुरे व्यवहार का बदला लेने की भावना तुम में नष्ट हो गई है। कहना पड़ेगा कि तुम निराशावादी हो चुके हो। संसार में निराशावादी को जीने का कोई अधिकार नहीं। अगर तुम भारत में इज्जत और सन्मान से जीना चाहते हो तो अपने दिलों में आशावाद की अग्नि प्रज्वलित करो और स्वयं संघर्ष करने के लिए कटिबद्ध हो जाओ। संगठित होकर दुष्टों का मुकावला करो! अगर आप संगठित होकर बलवान नहीं बनोगे तो तुम पर अत्याचार होते ही रहेंगे। हर एक गांव में महारों, चमारों और भंगियों की तरह मुसलमानों के भी दो चार घर होते हैं, परन्तु उन मुसलमानों को छेड़ने और उन पर किसी प्रकार का अत्याचार करने का साहस हिन्दुओं में नहीं होता।

हिन्दुओं के अत्याचार सहने के लिए तुम ही पैदा हुये हो और इसका कारण यह है कि हिन्दू तुम पर अत्याचार करना अपना धर्म समझते हैं। मुसलमानों पर अत्याचार इसलिये नहीं होता क्योंकि मुसलमानों के साथ एक बहुत बड़ी संगठित धार्मिक

शक्ति है, किन्तु आपके साथ कोई ऐसी धार्मिक शक्ति नहीं है। तुम असहाय हो, तुम में विवेक बुद्धि का नाश हो चुका है। अगर ऐसा ना होता तो तुम आज तक ऐसे अत्याचारी हिंदुओं के धर्म का अंग क्यों बने रहते !

इसलिए जितना शीघ्र हो सकता है यह हिन्दू धर्म रूपी गुलामी का जुआ अपने कंधों से उतार फैंको और किसी ऐसे अन्य समतावादी धर्म का अंग बन जाओ जो तुममें आत्म सम्मान, साहस और क्रांति का बीज बोता हो। सवर्ण हिन्दू तब तुम पर अत्याचार करने बंद कर देवेंगे। हिन्दुओं के धर्मशास्त्र विधान जो तुम्हारी उन्नति के मार्ग में रोड़ा अटका रहे हैं, काफूर की तरह उड़ जावेंगे तब तुम इस अधर्म से छुटकारा पाने पर आप अपनी मनचाही उन्नति कर सकते हो। आपके कल्याण के लिए यह आवश्यक है कि जितनी जल्दी हो सके तुम हिन्दू समाज और हिन्दू धर्म से बगावत कर दो। तुम्हारे जीवन के लिए यही एक संजीवनी बूटी है। याद रखिए हिन्दू रहते हुए तुम कभी आत्म सन्मान का जीवन नहीं बिता सकते। तुम्हें कभी भी हिन्दू समाज में समान अधिकार नहीं मिल सकता। जिन हिन्दू धर्म ग्रन्थों ने तुम्हें पापयोनि, नीच, चंडाल, अति शूद्र और अब हरिजन का नया लेबल लगाकर दुर्बल बना दिया है और ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों को तुम्हारे सिर पर बिठा दिया है और समाज, शासन, राजशासन, भूमि-अधिकार तथा धर्म पर उनका अधिकार कर लिया है। तुम्हें इन सब अधिकारों से वंचित करके पशुओं से भी अधिक अपमानित कर दिया, क्या तुम्हारे भीतर अब भी मानवता का अभिमान नहीं जागेगा ?

जैसे स्वस्थ होने के लिए बीमारी का निदान किया जाता है और रोग के मूल कारणों को मिटाए बिना मनुष्य को स्वास्थ्य नहीं मिल सकता; उसी प्रकार अछूतों को अपने अत्यन्त पतन, सामाजिक और आर्थिक गिरावट, अत्याचार और अन्यायों के जख्मों का मूल कारण खोजना होगा और वह मूल कारण है हिन्दू

धर्म और हिन्दू धर्म ग्रन्थों के जूए को गले में अपनी इच्छा से बाँधे रखना। जब तक तुम हिन्दू रूपी तांगे के टट्टू बने रहोगे तुम अपने सवर्ण हिन्दू कोचवान की चाबुक खाते २ मर जाओगे। इस लिए अपने उद्धार के लिए जल्दी से जल्दी हिन्दू धर्म के चीथड़े को जिसमें हजारों प्रकार के जिरासीम दिन-रात तुम करोड़ों मनुष्यों को रोगी बना रहे हैं ऐसे चीथड़ों को जला डालो। इस हिन्दू रूपी अभिशाप से तुम अपना पिंड केवल संघर्ष करने से ही छुड़ा सकते हो। इसलिए सदा संघर्षरत रहो। यही तुम्हारी मुक्ति का मार्ग है। बाबा साहेब ने अछूतों की जागृत करने के लिए जीवन भर देश के प्रत्येक भाग में सभा-सम्मेलन करके अपने भाषणों में बार-बार अछूतों को चेतावनी दी और कहा कि गुलामों! बगावत कर दो। ऐसे धर्म, समाज और शासन के खिलाफ जो तुम्हें सदियों से गुलाम रखता चला आ रहा है।

सम्मान के लिये धर्म परिवर्तन करो

बाबा साहेब अम्बेडकर ने अछूतों में आत्म सम्मान की भावना को पैदा करने के लिये धर्म परिवर्तन को अति आवश्यक माना है। उन्होंने एक विराट सम्मेलन में कहा था कि केवल नाम बदलने या लेबल लगाने से अछूतों को कोई लाभ नहीं पहुंच सकता। अगर चमार अपने आप को रविदासिया या रमदासिया सिक्ख कहे, भंगी अपने आप को भंगी न कह कर बाल्मीकि कहे अथवा मजहबी सिक्ख कहे, इसी तरह महार अपने आप को चोखा मेला भक्त कहलाए तो ऐसे लेबल लगाने से अछूतपन छिपता नहीं। आर्य समाजियों ने चमारों को शुद्ध करके उन्हें आर्य, डोमों को शुद्ध करके उन्हें महाशय, मेघों और बटवालों को शुद्ध करके उन्हें भक्त की उपाधि दी किन्तु सवर्ण हिन्दू जातियों में इन अछूतों का ऐसे नये नाम कुछ भी तबदीली नहीं ला सके।

उनकी नज़रों में ऐसे सब नाम अछूतपन को ही जाहिर करने वाले हैं। गांधी जी ने भी इन अछूतों को एक नया नाम हरिजन दिया किन्तु गाँधी जी का यह नामकरण हरिजन भी सवर्ण हिन्दुओं की नज़र में अछूतपन का ही दूसरा नाम है। इस प्रकार के बनावटी नामों से अछूतपन कभी दूर नहीं हो सकता।

किसी कंगाल को लखपत राय कहने पर और किसी मरियल, कमजोर आदमी को भीमसेन नाम देने पर जैसे वह क्रमशः दौलतमन्द और पहलवान नहीं समझा जा सकता उसी प्रकार रविदासिया, मज़हबी, बाल्मीकि, चोखा मेला, हरिजन आदि नये नाम अछूतों को अछूतपन के गढ़े से बाहर नहीं निकाल सकते। ऐसे ही नाम बदलने से हिन्दू धर्म से छुटकारा नहीं मिल सकता। अछूतों में जितने भो सन्त, महात्मा और गुरु पैदा हुए हैं वह सब हिन्दू धर्म को मानते रहे हैं। इन सन्तों को आदमी और आदमी के दरमिआन सम्बन्ध की ज्यादा चिन्ता न थी। उनको तो ज्यादा आदमी और परमात्मा के दरमिआन संबन्ध की चिन्ता थी। उन्होंने यह प्रचार नहीं किया था कि सब इन्सान बराबर हैं बल्कि यह प्रचार किया था कि सब इन्सान परमात्मा की नज़र में बराबर हैं। वह तो यही कहते-कहते मर गए कि जातपांत पूछे नहिं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई। ऐसे अछूत सन्त-महात्माओं के पास इन अछूतों की सामाजिक, आर्थिक और शिक्षा सम्बन्धी सांसारिक उन्नति के लिये कुछ भी नहीं था। वह इन अछूत जातियों की गरीबी और अपमान को जो पल-पल और पदे-पदे इस हिन्दू समाज में होता था दृष्टि में न लाकर इन्हें केवल प्रभु भक्ति का ही पाठ पढ़ाते रहे। उन्होंने कभी यह प्रचार नहीं किया कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सब इन्सान बराबर हैं; बल्कि केवल ईश्वर प्राप्ति और मरने के बाद मुक्ति के लिए भक्ति का झूठा अमृतपान कराते रहे। उन्होंने समाज की बुनियाद को हिन्दुओं से अलग डालने का प्रयत्न नहीं किया बल्कि ऐसे अछूत सन्त, महात्मा—राम, कृष्ण, माधव, हरि, विष्णु, दामोदर आदि

के ही गुण गाते थे और उन्हें ईश्वर का अवतार मानते थे। ऐसे जाति-पांति के प्रचारक देवताओं के नाम ले-लेकर भक्ति रस की वाणियाँ और कविताएं रचते थे। इस प्रकार ये अछूत सन्त-महात्मा हिन्दू धर्म की वर्ण व्यवस्था की जड़ उखाड़ने की बजाय उसे पानी दे-दे कर हरा-भरा रख रहे हैं। हिन्दू देवी-देवताओं का भक्त बनने, हिन्दू मन्दिरों में प्रवेश करने और हिन्दू धर्म के त्यो-हारों को मनाने से अछूतों का कभी उद्धार नहीं हो सकता। जैसे गन्दे पानी में रह कर अच्छे पानी पीने की इच्छा करना निरर्थक प्रयास है, उसी प्रकार हिन्दू धर्म में रह कर अछूतों के अपने नाम के साथ नये लेबल लगाना उन्नति की आशा का प्रयास भी निर-र्थक सिद्ध हुआ है। बौद्ध, ईसाई और मुसलमान कहलाना और इन धर्मों को अपनाना धर्मपरिवर्तन है। यह केवल नाम बदलना नहीं है। इन धर्मों का आधार ही दूसरा है। इनका सामाजिक और धार्मिक दृष्टिकोण ही दूसरा है। इनके समाज की रचना ही अन्य प्रकार की है। इनकी सभ्यता और संस्कृति भी हिन्दुओं से भिन्न है। अछूत भाइयो ! आप जब तक हिन्दू धर्म में रहेंगे तब तक केवल नाम बदलने से काम नहीं चलेगा। रोग का दूसरा नाम रखने से रोग दूर नहीं होता। ज़हर का नाम बदलने से जहर की शक्ति और स्वभाव नहीं बदल सकते। जिस प्रकार शरीर के रोगों का नाश दवाई से होता है उसी प्रकार अछूत समाज के दुखों का नाश भी केवल धर्म परिवर्तन से होगा। हिन्दू धर्म की बुनि-याद ही ऊंच नीच, जात-पांत, नफरत और घृणा की नींव पर रखी गई है। अत: आने वाले हजारों वर्षों तक भी अछूतों के हिन्दू बने रहने पर हिन्दू समाज में अछूतों को उच्च वर्ण की बराबरी का स्थान नहीं मिल सकता। ऐसा हिन्दू धर्म शास्त्रों का फतवा है। अछूतों का कल्याण केवल बुद्ध धर्म अपनाने से ही होगा। यही बाबा साहेब का अमर सन्देश है।

बाबा साहेब ने बुद्ध धर्म ही अपनाने को क्यों कहा

बाबा साहेब ने इस समय प्रचलित विद्यमान धर्मों की अपेक्षा केवल बुद्ध धर्म अपनाने के लिए इसलिये कहा था क्योंकि बुद्ध धर्म एक वैज्ञानिक जीवन पद्धति (Way of Life) है। इसमें मानव में ऊंच-नीच की जननी जाति-पांति (चातुर्वर्ण) की व्यवस्था नहीं है। यह धर्म मनोविज्ञान और दलील की कसौटी पर पूरा उतरता है। सदाचार, सामाजिक समता तथा स्वयं जीओ और दूसरे मानवों को भी सुखपूर्वक जीने दो—यह इस धर्म के आधार हैं। यह धर्म मैत्री और भ्रातृभाव सिखाता है; इसमें अन्धविश्वासों और पाखण्डों के लिए कोई स्थान नहीं; इसका सम्बन्ध मानव से है। इसको आत्मा, परमात्मा से कुछ लेना-देना नहीं। यह पृथ्वी पर ही सुख-शान्ति और समृद्धि का 'स्वर्ग' लाने के लिए एक अच्छे इन्सान और आदर्श समाज के निर्माण का मार्ग बताता है। यह गरीबी की प्रशंसा नहीं करता न यह नरक के डरावे देता है। बाबा साहेब ने 1935 में घोषणा कर दी थी कि वे हिन्दू अछूत पैदा हुए हैं, यह उनके बस की बात नहीं थी लेकिन वह हिन्दू समाज में रह कर नहीं मरेंगे यह उनके अपने बस की बात है। हिन्दू धर्म त्यागने की घोषणा के पश्चात् अछूतों के लिये कौन-सा धर्म अपनाना लाभदायक और उचित रहेगा ? इस विषय पर उन्होंने पूरे 21 वर्षों तक संसार के सभी धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन किया और फिर बड़ी गम्भीर सोच विचार के पश्चात् यह फतवा दिया कि अछूतों का कल्याण केवल बौद्ध धर्म अपनाने में ही है। बाबा साहेब का पूर्ण विश्वास था कि न केवल अछूतों का ही कल्याण बौद्ध धर्म अपनाने से होगा बल्कि सारे भारत देश के हिन्दुओं का कल्याण भी बुद्ध धर्म की शरण

में जाने से ही होगा। बाबा साहेब का कहना था कि आज के वैज्ञानिक युग में संसार के सब धर्मों के सिद्धांत विज्ञान के सूर्य की रौशनी में धुन्धले पड़ रहे हैं, लेकिन बुद्ध धर्म के सिद्धान्त आज भी विज्ञान की कसौटी पर खरे उतर रहे हैं। यह धर्म मानव जीवन व्यतीत करने का एक सुन्दर सन्मार्ग निर्माण करने वाला है। इस में जाति-पांति, ऊंच नीच, छुआछूत को जन्म देने वाली किसी भी प्रकार की कोई शिक्षा नहीं दी गई है। यह धर्म हिन्दुओं की भाँति न तो चार वर्णों को परमात्मा की बनाई हुई व्यवस्था मानता है और न हिन्दू धर्म शास्त्रों में वर्णित पुण्ययोनि (ब्राह्मण आदि) और पापयोनि (शुद्र आदि) का प्रचारक है। भगवान बुद्ध ने स्वयं कहा है कि मेरा धर्म समुद्र की भांति है। जिस प्रकार तमाम नदियों का जल समुद्र में मिल कर अपना पहला नाम खोकर समुद्र का ही जल बन जाता है। वहां न गंगा का जल, न यमुना का जल, न गोदावरी का जल और न ही ब्रह्म-पुत्र का जल जुदा-जुदा रहते हैं। इसी प्रकार मेरे धर्म में दीक्षित होने पर न कोई ब्राह्मण, न कोई शूद्र और न अछूत रहता है। वह केवल बोधि बन जाता है। बुद्ध धर्म मानव की उच्चता का आधार मनुष्य का श्रेष्ठ आचरण मानता है, लेकिन हिन्दू धर्म में सदा-चार की बजाय मनुष्य की उच्चता का आधार जन्ममूलक जाति या व्यवसाय को ही माना गया है। बौद्ध धर्म चमत्कारों, करा-मातों और परमात्मा तथा उसके संदेशवाहकों (पैगम्बरों), प्रतिनिधियों या अवतारों के आधार पर कायम न होकर तर्क, बुद्धि, सात्विक और तात्विक दर्शन के आधार पर स्थापित हुआ है। यह धर्म समानता का प्रचारक और इस धरती पर एक मानव का दूसरे मानव से क्या सम्बन्ध है, की शिक्षा देता है। यह धर्म, परलोक की झूठी कल्पनाएं, परमात्मा का मनुष्य से मिलन, प्रभु भक्ति से मुक्ति के झूठे दावे, पुनर्जन्म और आवा-गमन की भूलभुलैयों में बिलकुल विश्वास नहीं रखता।

इस तुलनात्मक विवेचन से पाठकों को ज्ञात हो जाना जरूरी

है कि बुद्ध धर्म को नींव बुद्धि, तर्क और मनोवैज्ञानिक है जबकि अन्य धर्म केवल कपोल कल्पनाओं, पाखण्डों और स्वार्थभरी मनोवृत्ति को कच्ची नींव पर खड़े हैं। इनके मुकाबले में अगर कोई भो धर्म वर्तमान इस वैज्ञानिक युग में स्वीकार करने योग्य है तो केवल बुद्ध धर्म ही है।

भारत भूमि को भगवान बुद्ध को जन्म देने के रूप में संसार भर में यश प्राप्त हुआ था किन्तु ब्राह्मणवाद के स्वार्थ को यह एक आँख नहीं भाया। भगवान बुद्ध के धर्म का ब्राह्मणों की दृष्टि में केवल यही दोष था कि वह ब्राह्मणों की खोखली और सारहीन बातों का खंडन करता है। वह ब्राह्मणों का ब्रह्मा के मुख से पैदा होना और शूद्रों का ब्रह्मा के पैरों से पैदा होना नहीं मानता था। वह पशुओं की बलि देकर देवताओं को प्रसन्न करने का घोर विरोधी था।

यही एक सच्चाई थी जिसने भारत में ब्राह्मणों को बुद्ध धर्म का वैरी बनाया और उन्होंने छल-कपट से भारत से बुद्ध धर्म को निकालने की सिर तोड़ कोशिश की।

मौर्यवंशीय सम्राट अशोक बुद्ध धर्म के प्रचार और प्रसार का एक अनुपम मिशनरी था। उसी मौर्य वंशीय प्रियदर्शी सम्राट अशोक की सन्तान में से अन्तिम बौद्ध राजा वृहद्रथ को उसके ब्राह्मण सेनापति पुष्यमित्र ने धोखाधड़ी से मारकर राजसिंहासन पर अपना अधिकार जमा लिया। हम दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि मानव धर्म के सूर्य भगवान बुद्ध के धर्म पर ब्राह्मणी सत्ता का पुनः ग्रहण लग गया और भारत में धर्म के स्थान पर अधर्म का घटाटोप अंधकार छा गया। फिर से ब्राह्मणों ने मानवता का दम घोटने वाली स्मृतियों और अन्य धर्मग्रन्थों के नए संस्करण तय्यार करके अपने स्वार्थ और बड़प्पन को कायम रखने के लिए भारत के करोड़ों मानवों को अधोगति और मानसिक दासता के कारावास में सदा के लिए कैद कर दिया। इस मानसिक बन्दीखाने की मज़बूत दीवारें अभी तक भी नहीं टूटीं

हैं ।

ऐसी दुर्दशा के दौरान में भारत में सबसे पीड़ित, दलित और अन्याय के शिकार तथा शताब्दियों से अछूत बनाई गई जातियों में बाबा साहेब डाक्टर अम्बेडकर पैदा हुए ।

आपका अन्तःकरण इस ब्राह्मणी जुल्म से जो शूद्रों और अछूतों पर ब्राह्मणों और सवर्णों ने धर्म के नाम पर जारी रखा हुआ था, विद्रोह कर उठा और सन् 1935 में आपने घोषणा कर दी कि "भले ही मैं अछूत हिन्दू पैदा हुआ हूं, यह मेरे अपने बस की बात नहीं थी, किन्तु मेरी यह प्रतिज्ञा है कि मैं हिन्दू रहकर मरूंगा नहीं यह मेरे अपने बस की बात है।" सचमुच उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा को जीवन का अन्त होने से कुछ महीने पहले पूरा कर दिया और वह 14 अक्तूबर 1956 को नागपुर में अपने लाखों अनुयाइयों के साथ बुद्ध धर्म में दीक्षित हो गए और आपने कहा कि मैं आज हिन्दू धर्म के कीचड़ से बाहर निकल गया हूं, और अब मेरा दुबारा पुनर्जन्म हो रहा है। इस प्रकार भारतवर्ष में भगवान बुद्ध के बुद्ध धर्म को पुनर्जीवित करने का झण्डा गाड़ दिया गया। महाराजा अशोक के बाद अगर किसी को बुद्ध धर्म का पुनरुद्धारक का श्रेय दिया जा सकता है तो वह हैं बाबा साहेब अम्बेडकर ।

बाबा साहेब ने जो धर्म-मार्ग अपनाया उनके पद-चिह्नों पर चलने वाले भारत-भर के करोड़ों लोग धड़ाधड़ बुद्ध धर्म में दीक्षित हो रहे हैं। पिछली पाँच-छह शताब्दियों में बाबा साहेब से पूर्व भी अछूतों में कई सन्त-महात्मा पैदा हुए हैं किन्तु अछूतों की हजारों वर्षों से इस भयानक व्याधि या रोग मिटाने के लिये उनके पास न तो शक्ति थी और न ही कोई अचूक औषधि ही थी। यह अछूत सन्त बेचारे ऊँची जाति वाले हिन्दुओं की दुत्कार, निरादर, अपमान, गरीबी और हर प्रकार की निन्दनीय धार्मिक और सामाजिक विषमता और असमानता का स्वयं भी शिकार बने रहे और अपने भाइयों और अनुयाइयों को भी जुल्म की इसी

चक्की में पिसते देखते रहे। आज तक भी इन सन्तों के भजनों और ईश्वर-भक्ति के गीतों ने चमार, महार, भंगी, डोम आदि अछूतों को अपने निन्दनीय और अपमान भरे ऊंची जाति के हिन्दुओं के दिल व दिमाग़ में परिवर्तन पैदा किया और न ही इन सन्तों की भजन वाणी और ईश्वर-भक्ति से छुआछूत और ऊँच-नीच की भावना मिटी। जहाँ इन अछूत सन्तों-महात्माओं की भक्ति भजन का सवर्ण हिन्दुओं पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ा वहाँ दूसरी तरफ इस भजन-भक्ति ने अछूतों के दिल व दिमाग में इस धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक अन्याय के विरुद्ध न तो क्रान्ति की ज्वाला भड़काई और न ही भविष्य में किसी प्रकार की विद्रोह की आशा की जा सकती है।

अछूतों की इस महाव्याधि को जो आज बेइलाज़ समझी जाती रही है, अगर किसी महावैद्य धन्वन्तरि ने पहचाना और इस महारोग से इन करोड़ों रोगियों को मुक्ति दिलाने के लिए दावा ही नहीं किया बल्कि आजीवन संघर्ष भी किया तो वह थे परम पूज्य बाबा साहेब डाक्टर बी० आर० अम्बेडकर।

वह जानते थे कि अछूतों की बीमारी का असली कारण हिन्दू धर्म है। बाबा साहेब ने आकाशभेदी जयघोष करके सदियों से हिन्दू धर्म के विष भरे तीरों से विंधे मृत अछूतों को झंझोड़ा और कहा कि यदि तुमने अपनी मानसिक दासता से छुटकारा पाना है तो बुद्ध धर्म की शरण में आओ। वह तुम्हारे अन्दर समाई गई हीन भावना के जहर का विनाश करके तुम्हारे अन्दर आत्म-सम्मान का भाव पैदा करेगा। उठो! तुम भारतवर्ष में 14 करोड़ व्यक्ति क्यों पंगु बने बैठे हो। उठो! बुद्ध धर्म की शरण में आकर अपना बल-शाली संगठन बनाओ और बाबा साहेब को अपना धर्म गुरू मान कर चलो। क्योंकि जो कुछ उन्होंने अछूतों के लिए किया है उतना और किसी सन्त-गुरु या ऋषि-महात्मा ने नहीं किया।

बुद्ध धर्म अपनाने के लाभ

1. बुद्ध धर्म को अपनाने से अनेक जातियों में बंटे हुए हमारे लोगों में एकता पैदा होगी। और हमारे समाज की रूप रेखा मुसलमानों और ईसाईयों के समान अपनी स्वतंत्र सत्ता रखेगी तथा हम संसार की एक महान बौद्ध विरादरी में शामिल हो जावेंगे।

2. हम बुद्ध धर्म की शरण ग्रहण करके हिन्दू धर्म शास्त्र, आत्मा-परमात्मा, देवी-देवता, अवतार, यज्ञ, तीर्थ, श्राद्ध, जात-पांत, ऊंच-नीच और छूआछूत आदि दुर्गुणों से मुक्त हो जाएंगे।

3. बुद्ध धर्म की शरण ग्रहण करने पर चातुर्वर्ण के जेलखाने से सदा के लिए हमें रिहाई मिल सकेगी। तब कोई भी धर्म हमें अछूत या शूद्र कह कर हमारा अपमान करने का साहस न कर सकेगा। हम भी मुसलमानों, ईसाइयों की भांति भारतीय बौद्ध कहलाएंगे और हमारे सामाजिक तथा राजनैतिक अधिकार इन्हीं धर्मों की भांति बिल्कुल सुरक्षित रहेंगे और उन्हें कोई भी चालाक धर्म या सम्प्रदाय हथिया नहीं सकेगा।

हम लोगों के बुद्ध धर्म ग्रहण करने पर संसार भर की बौद्ध जनता जिसके लिए भगवान बुद्ध की जन्म भूमि भारत एक पवित्र तीर्थ स्थान है, हम भारतीय बौद्धों को इन करोड़ों बौद्धों का हार्दिक स्नेह प्राप्त होगा। जैसे आज संसार भर का मुसलमान मक्का के हज्ज में आपस में हार्दिक स्नेह रखता है। हमारे एक मात्र नेता बाबा साहेब डाक्टर अम्बेडकर जी ने जहां अपनी सारी आयु भर हमारे राजनैतिक, शिक्षा तथा समान सामाजिक अधिकारों के लिए संवर्ष किया उसी प्रकार उन्होंने अपने परिनिर्वाण (मृत्यु) से पहले विशेष कर अछूतों के लिए अन्तिम संदेश, उपदेश और आदेश छोड़ा कि अछूतों के कल्याण एक का ही सीधा, सरल और सही रास्ता है और वह है उन सबका बुद्ध धर्म में दीक्षित होना।

हमारा यह परम कर्त्तव्य हो जाता है कि अपने मुक्तिदाता नेता बाबा साहेब के आदेशानुसार हम भारत भर के सब अछूत अपने नेता का अनुसरण करें और हिन्दू धर्म के कीचड़ से बाहर निकल कर भगवान बुद्ध के शुद्ध, निर्मल और पवित्र धर्म सरोवर में गोता लगा कर नीचता के कीचड़ को धो डालें।

याद रखिए अगर अछूतों ने अपने मुक्ति दाता के इस अंतिम संदेश को नहीं माना तो वह भारत में अपने घिनौने भूतकाल की तरह अपने आने वाले हजारों वर्षों तक दासता और निरादर से पीछा नहीं छुड़ा सकेंगे।

हिन्दू धर्म को बन्दरिया के मरे बच्चे की लाश की तरह तुम से छाती से लगाए बैठे हो। इस लाश के मोह के कारण तुम्हें भी कीड़े-कृमि पड़ चुके हैं। इस लाश को जितनी जल्दी छाती उतार कर परे फेंक सकते हो, फेंक दो, इसी में ही तुम्हारी भलाई है।

हिन्दू धर्म ने ब्राह्मणों को भूमि का देवता बना दिया, क्षत्रियों को राज पाट और अस्त्रशस्त्र पहना कर अभिमान और घमण्ड का पुतला बना दिया। हिन्दू धर्म ने वैश्यों को धन-सम्पत्ति और वाणिज्य-व्यापार की इजारादारी प्रदान की किन्तु तुम शूद्रों-अछूतों को हिन्दू धर्म ने क्या दिया है? केवल गरीबी, छुआछूत, जहालत, नफरत और निन्दित पशु-पक्षियों से भी बुरे अभिशाप, अन्याय और पीड़ाएं ही तुम्हारे लिए हिन्दू धर्म का उपहार है। तुम्हें इनकी गंगा पवित्र न कर सकी। हिन्दू धर्म के संस्कारों की अंधी नकल उतार-उतार कर तुम सदियों से पागल बनते चले आ रहे हो किन्तु आज भी हिन्दू धर्म की दृष्टि में तुम नीच हो, पापयोनि और अतिशूद्र और अन्त्यज चाण्डाल ही हो।

अगर पढ़े-लिखे अछूतों में खुद्दारी, आत्म सन्मान या सैल्फरस्पैक्ट (Self respect) का कुछ भी आभास है, तो इस लानत को जो धर्म के रूप में मृत सांप बन कर तुम्हारे गले में सदियों से लटकी चली आ रही है, इसे दूर फेंक कर मुक्त हो जाओ और अपने एक मात्र हितैषी नेता जिसे मुर्दों में प्राण फूंकने

वाला मसीहा कहा जाए तो अत्युक्ति न होगी। उसके द्वारा बतलाए सन्मार्ग बुद्ध धर्म में दीक्षित हो कर युगयुगान्तरों के कलंक के धब्बों को धो डालो।

बाबा साहेब की महानता

बाबा साहेब डा० अम्बेडकर एक गरीब किन्तु अति सात्विक वृत्ति के अछूत परिवार में पैदा हुए। वह अपनी विद्वत्ता और परिश्रम के बल से भारत के गगन पर सूर्य बनकर चमके और जन्मजात अभिमानी सवर्ण हिन्दू विद्वानों को चुनौती देकर स्वतन्त्र भारत के संविधान के निर्माता बने और हिन्दू कोडबिल की रचना करके उसे भारत की संसद में पारित कराने के लिए महारथी का पार्ट अदा किया। उनका सारा जीवन अछूतों पर हो रहे घोर अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करते बीता है। अगर मैं गीता के इस श्लोक की सचाई को मान लूं कि जब जब अधर्म और पाप चारों ओर भयानक रूप में बढ़ जाता है तो उस पाप निवारण के लिए कोई न कोई विभूति अवश्य जन्म लेती है और ऐसे घोर पाप के अंधकार को नाश करके सुखद प्रकाश फैलाती है तो मानना पड़ेगा कि हिन्दू धर्म के घोर अन्याय रूपी अछूतों पर छाए अंधकार को मिटाने के लिए बाबा साहेब अम्बेडकर ने अवतार लिया था। उन्होंने अछूतों के प्रति किए जाने वाले अन्याय के विरुद्ध आजीवन छाती तानकर युद्ध किया और अपनी योग्यता, दृढ़ संकल्प, ईमानदारी और मनोबल द्वारा संघर्ष करके अछूतों को हज़ारों बरसों को गुलामी से आज़ाद करा दिया। उन्होंने लन्दन गोलमेज कान्फ्रैन्स 1931 में अछूतों के कष्ट निवारण के लिए मुकद्दमा लड़ा और बुद्धिपूर्वक उसे जीता। 1942 में वायसराय की कौंसिल के सदस्य रहते हुए उन्होंने अछतों के लिए नौकरियों में रिजर्वेशन का अधिकार मनवाया।

अछूतों के लिए उच्च शिक्षा तथा विदेशों में पढ़ाई के लिए सरकार से धन प्राप्त किया। अछूतों की हर तकलीफ से वायसराए और भारत सरकार को अवगत कराया। भारत का संविधान तैयार करते समय अछूतों के लिए न केवल राजनीतिक अधिकार प्राप्ति के विधान बनाए बल्कि अछूतों का सरकारी नौकरियों में उनकी संख्यानुसार अनुपात निश्चित कराया। ऊंची ट्रेनिंग और शिक्षा में अछूतों के अनुपातानुसार उन्हें छात्रवृत्तियां दिलवाईं।

एक जमाना था जब यह कहावत प्रसिद्ध थी कि चूहड़े, महार, चमार का लड़का पढ़कर पटवारी थोड़ा बन जाएगा। आज बाबा साहेब के प्रताप से चूहड़े, चमार, महार का शिक्षित पुत्र पटवारी और कानूनगो तो क्या उनके सिरों पर तहसीलदार, माल अफसर, मैजिस्ट्रेट, डिप्टी कमिश्नर, अंडर सैक्रेट्री, ज्वाइंट सैक्रेट्री और गवर्नर बन कर सवार है। आज भारत की पार्लियामेंट और असैम्बलियों में अछूत मैम्बर ही नहीं वल्कि मन्त्रि-मण्डलों में मन्त्री पदों पर भी सुशोभित हैं।

अगर ऐसे पदाधिकारी अपने इस महान नेता द्वारा किए उपकारों को भूल जाएं तो इससे बढ़कर कोई नाशुक्रगुजारी या कृतघ्नता नहीं होगी। अछूतों को आज जो कुछ भी मिला है यह सब बाबा साहेब के संघर्ष का फल है। इसके अलावा अछूतों में आज जो प्रगति और जागृति दिखाई पड़ती है इसका सारा श्रेय या यश बाबा साहेब को ही पहुंचता है। इन सब उपकारों के अतिरिक्त सबसे बड़ा उपकार उनका अछूतों को एक नया सन्मार्ग दिखाना है। वह सन्मार्ग बौद्ध धर्म दीक्षा है। इस सन्मार्ग में हमेशा ज्ञान और तर्क का सूर्य चमकता रहे ताकि इस पर चलने वाले पुनः अंधकार के गढ़ों में ठोकर न खा जाएं—यह संशय दूर करने के लिए उनका बौद्ध धर्म पर प्रमाणिक ग्रन्थ है, जिसका नाम बुद्ध और उनका धर्म (Buddha and His Dhamma)। यह एक ऐसा प्रकाश स्तम्भ है जो न केवल भारतीय अछूतों को ही बल्कि सारे हिन्दुओं और संसार भर के सब बौद्ध धर्म के अनुयाइयों के मार्ग-

दर्शन के लिए बुद्ध फिलासफी की अपूर्व व्याख्या है जो मनोविज्ञान, समाज शास्त्र, और शास्त्र पर रोशनी डालने वाला एक बेमिसाल ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ का अध्ययन करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि बाबा साहेब ने बुद्ध धर्म के तत्वज्ञान पर भी सदियों से जमी काई को परे हटाकर अन्दर से निर्मल जल के दर्शन करा दिए हैं। बुद्ध धर्म की सबसे उत्तम व्याख्या इस ग्रन्थ में है।

बाबा साहेब का जीवन महान् था और उनकी मृत्यु भी महान् थी। उनकी मृत्यु के बाद अछूतों में धर्मान्तर की लहर दौड़ गई। अछूत लोग लाखों २ की संख्या में बौद्ध हुए और हो रहे हैं। एक व्यक्ति के धर्मान्तर करने से करोड़ों लोगों का धर्मान्तर करना संसार के धार्मिक इतिहास में एक अद्भुत तथा अपूर्व घटना है। वास्तव में बाबा साहेब एक असमान महापुरुष थे। उनकी मृत्यु पर देश-विदेश के नेताओं ने अपनी भावपूर्ण श्रद्धाँजलियां अर्पित करते हुए किसी ने उनको आधुनिक मनु, किसी ने भारत का मार्टिन लूथर, किसी ने भारत का डा० जान्सन, किसी ने अछूतों का मुक्तिदाता और किसी ने दुनिया का महान् बौद्ध नेता कहा। बाबा साहेब का महान् एवं संघर्ष-मय जीवन तथा उनके मानवतावादी आदर्श दलित जनता का सदैव मार्ग प्रदर्शन करते रहेंगे और उनका क्रान्तिकारी जीवन भारतवासियों को सामाजिक समता की प्रेरणा प्रदान करता रहेगा और सद्धर्म के मार्ग पर ले जाएगा। शताब्दियों से अत्या-चार, अन्याय, निरादर, गरीबी तथा अनपढ़ता का शिकार बनी करोड़ों निरीह, निर्दोष एवं जीवन के हर एक क्षेत्र में पिछड़ी दलित बनाई गई अछूत जनता का कल्याण होगा।

भारत का यथार्थ भारतरत्न अम्बेडकर

इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि बाबा साहेब अम्बेडकर दलित भारत के उद्धारक थे और उन्होंने अधिकतर संघर्ष इनके उद्धार के लिये ही किया। किन्तु वस्तुत: वह सारे राष्ट्र के ही हित चिन्तक थे। अत: उन्हें मैं वास्तविक भारत रत्न मानता हूं। उनका धार्मिक दृष्टि कोण, सामाजिक मान्यताएं और राजनीतिक नीति का उद्देश्य या लक्ष्य मानव मात्र के साथ न्याय, परस्पर समानता और भ्रातृभाव की सद्भावना पर ही आधारित था। उनका दृष्टिकोण विशुद्ध प्रजातन्त्रात्मक था। वह धर्म, समाज, अर्थ-व्यवस्था तथा राजनीति में तानाशाही या डिक्टेटरशिप के कट्टर विरोधी थे। हिन्दू धर्म शास्त्रों में विहित आदेशों को भी वह द्विज-शाही डिक्टेटरशिप ही मानते थे। उनके मत में आजतक करोड़ों नर-नारियों को शूद्र-अछूत बना कर और उन्हें हर प्रकार से दलित बना एवं दबाए रखना इसी ब्राह्मणी तानाशाही का भयानक रूप था। वह भगवान् बुद्ध की शिक्षा और उपदेशों को खालिस प्रजातान्त्रिक मानते थे। बुद्ध धर्म को वह केवल दलितों के लिये ही नहीं भारत भर की सारी जनता के लिए कल्याणकारी समझते थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि संसार भर में आज जो विभीषिकाएं, बेचैनी, विषमता और मत्स्य न्याय की महाव्याधि फैल रही है. उसका इलाज परमाणु बमों, उद्जन बमों और प्राणविनाशक गैसों आदि-वैज्ञानिक आविष्कारों से नहीं बल्कि भगवान बुद्ध के चार आर्य सत्यों पंच शीलों, अष्टांगिक मार्ग और दस परिमिताओं से ही होगा। उनका भगवान बुद्ध के धर्म को अपनाने का मुख्य कारण यही था। वह मानते थे कि भगवान बुद्ध का धर्म ही विशुद्ध मानव धर्म है। करुणा, प्रज्ञा, मैत्री और शील-समाधि ही मानव मात्र की आन्तरिक एवं वाह्य पीड़ा की औषधि है, जिनका आविष्कारक और अन्वेषक केवल भगवान बुद्ध ही थे। उनका मध्यम मार्ग ही व्यवहार्य और पालनीय है। हम भारतीयों का सौभाग्य है कि भारत ने भगवान बुद्ध के पश्चात् बाबा साहेब अम्बेडकर से महा-मनीषी, महाविद्वान, महा मानवतावादी और यथार्थ में—भारत रत्न को जन्म दिया है।